श्री नवाब सिंह चौहान : क्या सरकार की राय में ऐलोपैथ्स ही ऐसी बातों में राय दे सकते हैं और कोई वैद्य या यूनानी हकीम ऐसी बातों में राय नहीं दे सकते हैं ?

श्री डी० पी० करमरकर : सरकार तो गौर करने के वक्त जो हितकारी चीज होती है उस पर गौर करती है चाहे वह जहां से भी आये, आयुर्वेद से आये या ऐलोपैथी से आये । सब लोगों की राय को हम ध्यान में लाते हैं ।

شری تجمل حسین - آنریبل منسٹر نے یونانی اور طبی کانفرنس کے بارے میں سب کچھ کہا ہے لیکن میں یہ جاننا چاهتا ہوں کہ کیا گورنمنٹ کو اسکی خبر ہے کہ آیورویدک اور ہومیوپیتھک کانفرینسیز ہوئی ہیں اور انکے پریسیڈنٹس نے اسکے متعلق کیا رائیں دیں -

†[श्री तजम्मुल हुसन : आनरेबिल मिनिस्टर ने यूनानी और तिब्बी कान्फरेंस के बारे में जब कुछ कहा है लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या गवर्नमेंट को इसकी खबर है कि आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक कांफरेंसेज हुई हैं और उनके प्रेसिडेंट्स ने इसके मुताबिक क्या राये दीं ?]

MR. CHAIRMAN: He has got only what he has.

DR. R. B. GOUR: There are scientists in our country who have expressed a similar opinion.

SHRI D. P. KARMARKAR: I am not aware of any scientist having expressed an opinion to this effect.

DR. R. B. GOUR: Sir, may I draw your attention to a statement . . .

MR. CHAIRMAN: He says he wants to draw your attention to a statement made by a Calcutta scientist more or less corroborating this view. Is it so?

DR. R. B. GOUR: Yes, Sir. *(No reply)*

दामोदर वैली कारपोरेशन के हीरे के टुकड़ों का खोया जाना

*४३. श्री नवाब सिंह चौहान : क्या सिंचाई तथा विद्युत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दामोदर वेली कारपोरेशन के ड्रिलिंग औजारों से सम्बन्धित १८२ हीरे के टुकड़े खो गये हैं ; यदि ऐसा है तो घटना का विस्तृत विवरण क्या है ; और

(ख) उन हीरे के टुकड़ों का मूल्य क्या है, वह कब खोये हैं और इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यवाही की गई है ?

†[LOSS OF DIAMOND PIECES BELONGING TO DAMODAR VALLEY CORPORATION

*43. SHRI NAWAB SINGH CHAUHAN: Will the Minister of IRRIGATION AND POWER be pleased to state:

whether it is a fact that 182 pieces of diamond connected with the drilling instruments belonging to Damodar Valley Corporation have been lost; if so, what are the details of this incident; and

what is the value ofthose pieces of diamond; when theywere lost and what action has been taken so far in this regard?]

सिंचाई तथा विद्युत मंत्री (श्री एस० के० पाटिल) : (क) तथा (ख). अपेक्षित जानकारी का विवरण सभा पटल पर रख दिया है ।

विवरण

दामोदर वेली कारपोरेशन ने १९४९ से १९५३ की अवधि में साढ़े नौ लाख रुपये की कुल लागत पर ड्रिलिंग औजारों के लिये २०६० हीरे के टुकड़े और बोल

†Hindi transliteration.

†English translation.

खरीदे । नवम्बर, १९५४ में कारपोरेशन के आन्तरिक लेखा परीक्षकों के ध्यान में १८२ हीरे के टुकड़ों की कमी आई। कारपोरेशन द्वारा मामले की विस्तृत जांच की गई जिससे पता चला है कि केवल ८० हीरे के टुकड़े ही कम थे ।

२. ड्रिलिंग कार्य, जिनके लिये समय, समय पर हीरे के टुकड़े तथा शेल खरीदे जाते थे, १९४९ में आरम्भ किये गये और १९५३ के अन्त तक चलते रहे । यह कमी १९४९ से १९५१ की अवधि से सम्बन्धित है जब कि तिलैया, कोनार और बोकारो परियोजनाओं पर जोरों से ड्रिलिंग कार्य हो रहे थे । विश्वास किया जाता है कि हीरे के टुकड़े जिनका हिसाब नहीं मिला, वे हैं जो उपयोग में लाये जा चुके थे लेकिन जिनके बारे में कोई उपयुक्त रिकार्ड नहीं रखा गया था या यदि रखा भी गया था तो अधिक समय बीत जाने के कारण तथा पुराने अधिकारियों और ड्रिलिंग कर्मचारियों के कारपोरेशन की नौकरी छोड़ कर चले जाने के कारण उसका पता नहीं लगाया जा सकता । प्रारम्भिक अवस्थाओं में इंजीनियरों तथा ड्रिलिंग कर्मचारियों ने उपयोग में लाये गये तथा बेकार हीरे के टुकड़ों के निपटान के बारे में रिकार्ड रखने की आवश्यकता को नहीं समझा । ड्रिलिंग औजारों के लिये हीरे के टुकड़ों की बहुत सीमित मांग होने के कारण तथा भारत में इस्तेमाल किये हुए और बेकार हीरे के टुकड़ों में से काम लायक भाग निकालने के लिये कोई प्रबन्ध न होने के कारण इस मामले में धोखेबाजी या दुर्विनियोग का सन्देह नहीं है ।

३. ड्रिलिंग औजारों में लगाये जाने वाले ८० हीरे के टुकड़ों का मूल्य १७,००० रुपये था किन्तु उपयोग के बाद इनका मूल्य बहुत थोड़ा है । क्योंकि अब सम्बन्धित अधिकारियों तथा ड्रिलिंग कर्मचारियों में से कोई भी कारपोरेशन की नौकरी में नहीं है, इस मामले में आगे कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती और कारपोरेशन अपना मुख्य लेखा परीक्षक की सलाह से इस राशि को बट्टे खाते में डालने का विचार कर रहा है । हीरे के टुकड़ों को रखने के लिये कारपोरेशन दोहरे ताले वाली तिजौरी का प्रबन्ध कर चुका है और हर एक टुकड़े का हिसाब रखा जाता है । दामोदर वेली कारपोरेशन द्वारा जुलाई १९५३ में जारी किये गये तथा समय समय पर संशोधित गोदाम लेखा नियम (स्टोर एकाउन्टिंग रूल्स) भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिये पर्याप्त समझे जाते हैं ।

t[THE MINISTER OF IRRIGATION AND POWER (SHRI S. K. PATIL): (a) and (b). A statement giving the requisite information is laid on the Table of the House.

STATEMENT

The D.V.C. procured 2060 pieces of drilling bits and shells between the years 1949 and 1953 at a total cost of Rs. 9i lakhs. In November 1954, the Internal Auditors of the Corporation noticed a shortage of 182 diamond bits. A detailed investigation was instituted by the Corporation into the matter and this revealed that there were only 80 bits short.

2. The drilling operations for which the diamond bits and shells were procured from time to time, were started in 1949 and continued up to the end of 1953. The discrepancy relates to the period 1949 to 1951 when there were heavy drilling operations at Tilaiya, Konar and Bokaro projects. The unaccounted for bits are believed to be used bits in respect of which the records were not properly maintained, or if maintained, cannot be traced due to the lapse of time and the absence of officers and drill-hands who have left the service of the Corporation. The Engineers and drill-hands did not at the earlier stages appreciate the need for maintaining a record aoout the disposal of used and unserviceable drilling bits. As the demand for diamond drill bits is very limited and as there ■s no arrangement In India to salvage

tEnglish translation.

diamonds, if any left, in the used and unserviceable drilling bits, no fraud or misappropriation is suspected.

3. The cost of the 80 pieces of drilling bits was Rs. 17,000. Their value as used up bits is very small. As none of the concerned officers and drill hands is now in the service of the Corporation, no further action can be taken in the matter and the Corporation propose to write off the amount in consultation with the Chief Auditor of the D.V.C. The Corporation has already provided double lock receptacles for the storage of diamond bits in stock and accounts are being maintained with respect to the number of each bit. The store accounting rules of the **D.V.C.** issued in July 1953 and amended from time to time are considered sufficient to guard against such incidents in future.]

श्री नवाब सिंह चौहान : यह जो विवरण सभा पटल पर रखा गया है उसमें बताया गया है कि जो आडिटर्स थे उन्होंने पहले तो १८२ हीरे के टुकड़ों की कमी बताई लेकिन बाद में वह कमी ८० हीरे के टुकड़ों की ही रह गई। तो जिन्होंने १८२ टुकड़ों की कमी बताई थी उनकी गल्ती थी या जिन्होंने ८० टुकड़ों की कमी बताई है उनकी गल्ती है ?

श्री एस० के० पाटिल : इसमें कोई गल्ती नहीं है। फिर जब जांच की गई तो मालूम हुआ कि १८२ नहीं बल्कि ८० टुकड़ों की कमी है, जो आखीर का स्टेटमेंट है वह ८० टुकड़ों की कमी का है।

श्री नवाब सिंह चौहान : इस विवरण में बतलाया गया है कि प्रारम्भिक अवस्थाओं में इंजीनियरों तथा ड्रिलिंग कर्मचारियों ने उपयोग में लाये गये तथा बेकार हीरे के टुकड़ों के निपटाने के बारे में रिकार्ड रखने की आवश्यकता को नहीं समझा। क्या सरकार ने इसकी जांच की कि किस वजह से उन्होंने उनका रिकार्ड रखने की आवश्यकता नहीं समझी ?

श्री एस० के० पाटिल : वे लोग तो नहीं हैं। वे तो २, ३ वर्ष के पहले नौकरी छोड़ कर चले गये हैं। जब पहले जांच हुई तो पूरा पता नहीं चला लेकिन वे सब जितने टुकड़े थे वे मिले और खाली ८० टुकड़े नहीं मिले जिनकी कीमत स्टेटमेंट में दी है।

श्री नवाब सिंह चौहान : अभी कहा गया है कि उनके खिलाफ इसलिये कार्यवाही नहीं हुई क्योंकि वे लोग नौकरी छोड़ कर चले हैं। क्या सरकार के पास ऐसा कोई कानून नहीं है कि नौकरी छोड़ कर चले जाने के बाद भी उनके खिलाफ कार्यवाही की जा सके ? अगर कोई ऐसा कानून है तो फिर उनके खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं की गई ?

श्री एस० के० पाटिल : कानून तो है लेकिन हो सकता है कि . . .

MR. CHAIRMAN: Kindly speak in English. This side also might understand.

SHRI S. K. PATIL: In most of these, important persons who were in charge of it were not our countrymen. One of them was from Canada and some other people. It is very difficult to find them for these little pieces that are missing. The number is very small and the price also is comparatively very small.

SHRI BHUPESH GUPTA: May I know whether any representations to-the Governments of the countries concerned were made by the Government here?

SHRI S. K. PATIL: I do not think we have made any representation. The matter is not so very important that for such a small thing diplomatic channel should be used.

SHRI BHUPESH GUPTA: May I know, Sir, whether the Government is aware that in the event of such apparent crime, it is within the powers of the Government to pursue this matter and seek an extradition warrant

so that the people are brought here and tried?

SHRI S. K. PATIL: Government does not think so.

SHRI M. GOVINDA REDDY: May I know, Sir, if it is true that these bits could not be detached from the drills?

SHRI S. K. PATIL: It was very difficult to detach them from the drills. That was also a fact.

SHRI M. GOVINDA REDDY: May I know, Sir, whether they are not marketable?

SHRI S. K. PATIL: They are used, and therefore their marketability fs **a** question of doubt.

SHRI M. GOVINDA REDDY: They are not used as jewellery or any precious articles.

SHRI S. K. PATIL: They cannot be used as jewellery. They are mostly used for drilling purposes, and they are being used.

DR. RAGHUBIR SINH: May I know if there is any administrative arrangement to the effect that when an officer vacates his office, whatever things are in his charge are properly handed over to the succeeding officer?

SHRI S. K. PATIL: The Note has explained, Sir, that there was a very heavy drilling during those days in three or four places, and therefore these pieces had to be rushed everywhere. During those days it did happen, but now a kind of foolproof arrangement has been made whereby it is impossible that any single piece could be missing without being accounted for.

SHRI TAJAMUL HUSAIN: What would be the approximate value of these diamonds?

SHRI S. K. PATIL: The original value was Rs. 17,000 for 80 pieces, but after being used their value is almost zero. They are of no use at all.

दिल्ली के गांवों में बिजली का लगाया जाना

***४४. श्री नवाब सिंह चौहान :** क्या सिंचाई तथा विद्युत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दिल्ली के गांवों में बिजली लगवाने की कोई योजना है ; और यदि है, तो यह योजना कब तक कार्यान्वित हो जायेगी ; और

(ख) इस योजना के अधीन कितने गांवों में बिजली लगेगी और इस पर कितना खर्च होगा ?

t [ELECTRIFICATION OF VILLAGES IN DELHI

•44. SHRI NAWAB SINGH CHAUHAN: Will the Minister of IRRIGATION AND POWER be pleased to state:

(a) whether there exists any scheme to electrify the villages of Delhi; if so, the time by which this scheme will be implemented; and

(b) the number of villages to be electrified under this scheme and the amount of expenditure to be incurred thereon.]

सिंचाई तथा विद्युत मंत्री (श्री एस० के० पाटिल) : (क) जी हां । दूसरी पंच वर्षीय योजना अवधि में दिल्ली के ५४ गांवों में बिजली देना प्रस्तावित है । इस योजना पर वर्तमान वित्तीय वर्ष में कार्य आरम्भ करने की आशा है ।

(ख) ५४ गांव । लगभग २५ लाख रुपया ।

t[THE MINISTER OF IRRIGATION AND POWER (SHRI S. K. PATIL): (a) Yes, Sir. It is proposed to electrify 54 villages of Delhi territory during the 2nd Five Year Plan period. Work on the scheme is expected to be taken up during the current financial year.

tEnglish translation.